IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

यात्रा वृत्त 'दक्षिणी गंगा गोदावरी' में प्राकृतिक सौंदर्य और लेखक की भावनात्मक अनुभूति : एक साहित्यिक अध्ययन

मुकेश सैनी

शोधार्थी (पी.एचडी.)

हिन्दी विभाग

श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय

चुड़ेला (झुंझनूं) राजस्थान

शोध सारांश

यात्रा साहित्य भारतीय साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है, जिसमें लेखक अपने भौगोलिक अनुभवों के साथ–साथ अपनी भावनात्मक और आध्यात्मिक अनुभूतियों को भी व्यक्त करता है। काका कालेलकर द्वारा रचित 'दक्षिणी गंगा गोदावरी' एक उत्कृष्ट यात्रा वृत्तांत है, जिसमें उन्होंने दक्षिण भारत की यात्रा के दौरान गोदावरी नदी के सौंदर्य, उसके तटों पर बसे धार्मिक और सांस्कृतिक स्थलों, तथा प्राकृतिक परिवेश का मनोहारी चित्रण किया है।लेखक ने गोदावरी नदी को 'दक्षिणी गंगा' के रूप में देखते हुए इसकी पवित्रता और सांस्कृतिक महत्ता को उजागर किया है। नदी की प्रवाहमान धारा, हरे–भरे तट, घाटों पर बसे मंदिर और पहाड़ियों की प्राकृतिक छटा इस यात्रा वृत्त को एक जीवंत रूप प्रदान करते हैं। यह यात्रा वृत्त केवल प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन नहीं है, बल्कि इसमें लेखक की गहरी आध्यात्मिक अनुभूति भी प्रकट होती है। काका कालेलकर प्रकृति को एक जीवंत शक्ति मानते हैं और उसकी शांति में आत्ममंथन तथा आत्मिक उन्नति का अनुभव करते हैं। वे यात्रा के माध्यम से केवल बाहरी स्थलों का अवलोकन नहीं करते, बल्कि अपने आंतरिक विचारों और भावनाओं को भी व्यक्त करते हैं।

शब्द कुंजी : यात्रा साहित्य, प्राकृतिक सौंदर्य, भावनात्मक अनुभूति, गोदावरी नदी, आध्यात्मिकता, काका कालेलकर।

प्रस्तावना

यात्रा साहित्य भारतीय साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है, जो केवल स्थानों का भौगोलिक विवरण प्रस्तुत करने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि इसमें लेखक की आत्मीय अनुभूतियाँ, भावनाएँ और दृष्टिकोण भी समाहित होते हैं। यात्रा वृत्तांत न केवल एक भौतिक यात्रा का विवरण होता है, बल्कि यह मानसिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अन्वेषण का भी माध्यम बनता है। काका कालेलकर द्वारा रचित 'दक्षिणी गंगा गोदावरी' एक ऐसा ही महत्वपूर्ण यात्रा वृत्तांत है, जिसमें लेखक ने दक्षिण भारत की यात्रा के दौरान गोदावरी नदी और उसके परिवेश के प्राकृतिक सौंदर्य का सजीव चित्रण किया है। इस यात्रा में लेखक केवल बाह्य सौंदर्य का अवलोकन नहीं करते, बल्कि प्रकृति के साथ आत्मीयता स्थापित करते हैं और इसके माध्यम से अपने आध्यात्मिक तथा भावनात्मक अनुभवों को साझा करते हैं। लेखक काका कालेलकर ने प्रस्तुत यात्रा वृत्त

'दक्षिण गंगा, गोदावरी' में गोदावरी नदी के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन अनेक पद्धतियों से किया है। सर्वप्रथम उन्होंने गोदावरी के प्राकृतिक सौन्दर्य के सन्दर्भ में लिखा है कि 'गोपाल कृष्ण के जीवन में जिस तरह सर्वत्र विविधता ही विविधता भरी हुई है, एक–सा उत्कर्ष विखाई देता है, उसी तरह गोदावरी के अति–दीर्घ प्रवाह के किनारे सुष्टि–सौन्दर्य की विविधता और विपुलता भरी पड़ी है।'

परिचय

काका कालेलकर (1885–1981) भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, समाज सुधारक, पत्रकार और साहित्यकार थे। उनका लेखन गहरी संवेदनशीलता, आध्यात्मिकता और प्रकृति प्रेम से ओत–प्रोत है। वे महात्मा गांधी के निकट सहयोगी थे और उनके विचारों से प्रभावित होकर उन्होंने भारतीय संस्कृति, परंपरा और दर्शन को अपनी कृतियों में स्थान दिया। 'दक्षिणी गंगा गोदावरी' उनकी प्रसिद्ध यात्रा कृतियों में से एक है, जिसमें उन्होंने गोदावरी नदी की यात्रा के माध्यम से दक्षिण भारत के भौगोलिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहलुओं का वर्णन किया है। इस यात्रा वृत्त में प्राकृतिक सौंदर्य का सूक्ष्म चित्रण मिलता है, जिसमें गोदावरी नदी की प्रवाहमान धारा, उसके किनारे बसे तीर्थ स्थल, मंदिर, घाट, हरियाली और पहाड़ियों का वर्णन अत्यंत हृदयस्पर्शी ढंग से किया गया है। यह कृति केवल भौतिक यात्रा का वृत्तांत नहीं है, बल्कि यह लेखक की आध्यात्मिक खोज और भावनात्मक संवेदनशीलता को भी दर्शाती है। प्रकृति के सौंदर्य में लेखक को एक दैवीय अनुभूति होती है, जिससे वह आत्ममंथन और मानसिक शांति का अनुभव करते हैं।

'दक्षिणी गंगा गोदावरी' का संक्षिप्त परिचय

'दक्षिणी गंगा गोदावरी' यात्रा वृत्तांत भारतीय साहित्य के यात्रा लेखन की महत्वपूर्ण कृति है। यह यात्रा मुख्य रूप से गोदावरी नदी और उसके आसपास के क्षेत्रों की प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक महत्ता का वर्णन करता है। लेखक इस यात्रा के माध्यम से प्रकृति के प्रति अपने गहरे जुड़ाव और संवेदनशील दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है।

उद्गम स्थल का सौन्दर्य– लेखक ने गोदावरी के उद्गम स्थल के सौन्दर्य में कल्पना और असम्भव को सम्भव बनाने का चित्रण किया है। उनका कहना है कि गोदावरी सिर्फ दो गज की खाई में से निकलती है तब वह क्या सोचती होगी? अपनी सारी शक्ति और युक्ति काम में लाकर नाजुक समय में अपनी महत्पना को आगे ले चलने वाले किसी राष्ट्र पुरुत्र की तरह और संसार को विस्मय में डालने वाली गर्जना के साथ वह यहाँ से निकलती है। नदी में आने वाले घोडापुर और हाथीपुर जैसी भारी पुरों की बातें हम सुनते हैं, किन्तु एकदम पन्द्रह मीटर जितना ऊँचा पुर क्या कभी कल्पना में भी आ सकता है? पर जो कल्पना में सम्भव नहीं है, वह गोदावरी के प्रवाह में सम्भव खाई में से निकलते हुए पानी के लिए अपना पृष्ठ भाग भी सपाट बनाये रखना असम्भव सा हो जाता है। अर्ध्य देते समय जिस प्रकार अंजलि की छोटी नाली–सी बन जाती है, उसी प्रकार खाई में से निकलने वाले पानी के पृष्ठ भाग की भी एक भयानक नाली बनती है। किन्तु अदभुत रस तो इससे भी आगे अधिक है। इस नाली में से अपनी नाव को ले जाने वाले साहसी नाविक भी वहाँ मौजूद हैं। नाव के दोनों ओर पानी की ऊंची–ऊंची दीवारों को नाव के ही वेग से दौड़ते हुए वेखकर मनुष्य के दिल में क्या–क्या विचार उठते होंगे।

इस प्रकार लेखक ने कहा है कि त्रयम्बक के पास पहाड़ की एक बड़ी दीवार में से गोदावरी का उद्गम हुआ है। इसकी सम्पूर्ण कला भद्राचलम से ही देखी जा सकती है। यहाँ इसका पाट लगभग दो किलोमीटर चौड़ा है। यही नदी ऊँचे–ऊँचे पहाड़ों में से होकर अपना रास्ता बनाती हुई सिर्फ यो गज की खाई में से निकालती है, उस समय घोर गर्जना करती है। इसका अपर रूप अर्ध्य देते व्यक्ति की अंजलि के समान होता है। यह मद्राचलम से राजमहेन्द्री तक अखण्ड रूप से बहती है। इसके बाद इसने जीवन (जल) वितरण करना आरम्भ कर दिया। वह गोमती गोदावरी तथा वशिष्ठ गोदावरी कहलाई। राजमहेन्द्री के पास प्राकृतिक दृश्यों की शोभा देखते ही बनती है। पश्चिम की और पहाड़ियों का सुन्दर झुण्ड मन को मोह लेता है।

सांवले बादलों के कारण गोदावरी की श्यामलता बढ़ जाती है। पहाड़ियों पर उतरते हुए सफेद बादल ऋषियों के जैसे मालूम होते हैं।

राजमहेन्द्री के पास गोदावरी की प्राकृतिक शोभा– राजमहेन्द्री के पास गोदावरी की प्राकृतिक शोभा को लेखक ने अनोखा कहा है और वहाँ काव्य अनुभव किया है। उसने पश्चिम की ओर नजर डाली तो दूर–दूर तक पहाड़ियों का एक झुण्ड बैठा हुआ प्रतीत हुआ। आकाश में बादल छाये हुए थे। इसलिए धूप बिल्कुल नहीं थी। सांवले बाबलों के कारण गोदावरी के धूल–घूसरित जान की कालिमा और बढ़ गई थी। पहाड़ियों पर उत्तरे हुए सफेद बादल तो बिल्कुल ऋषियों जैसे मालूम हो रहे थे। निबन्धकार नदी के आस–पास के सौन्दर्य को देखकर अभिभूत हो गया था। पहाड़ियों, जंगलों और हरियाली का चित्रण यात्रा के दौरान लेखक ने जंगलों, पर्वतों, और विस्तृत हरियाली का रोमांचक चित्रण किया है। वह प्रकृति के इन रूपों को न केवल बाहरी सौंदर्य के रूप में देखते हैं, बल्कि उन्हें मानवीय भावनाओं से जोड़कर एक गहरी अनुभूति उत्पन्न करते हैं। सूर्यास्त और चंद्रमा की रोशनी में प्रकृति यात्रा वृत्त में सूर्यास्त और चंद्रमा की रोशनी में गोदावरी का सौंदर्य अत्यंत भावनात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। पानी में पड़ती रोशनी, लहरों का संगीत, और रात की निस्तब्धता दृ यह सभी दृश्य लेखक की कल्पना में एक अद्भुत संसार रचते हैं।

नदी का किनारा अर्थात् मानवी कृतज्ञता का अखण्ड उत्सव– गोदावरी के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन करते हुए लेखक नदी के तट का सामंजस्य मानवीय भावनाओं के साथ करता है और निर्जीव को सजीव का बाना पहनाता है। सलिल समृद्ध गोदावरी को अपने अंक में समेटते हुए गोदावरी के तट निरन्तर आलिंगन सुख भोग रहे हैं। अतः वे गोदावरी के कृतज्ञ है कि वह अपने वेग को सीमित रखकर उनको जीवनदान दिए हुए हैं। यदि गोदावरी उफन उठे तो इन तटों का पता ही न चले। लेकिन वह ऐसा नहीं करती है, क्योंकि उसकी सहन, स्वाभाविक ममता इन किनारों से हो गई है। वह अपनी सीमा में रहकर किनारों को जीवन–वान दे रही है। इस जीवन–बान के प्रति नदी के तट अर्थात् किनारे कृतज्ञ है। लेखक ने नदी के किनारों को मानवी कृतज्ञता का अखण्ड उत्सव कहा है और सफेद प्रासादों व ऊँचे पर्वत शिखरों को एक अखण्ड उपासना, जहाँ भक्त लोग नदी की लहरों पर से मन्दिर के घण्टनाद को उस पार तक भेजते हैं।

जल का सौन्दर्य– इतना ही नहीं लेखक ने गोदावरी के जल के सौन्दर्य का भी चित्रण किया है। सीता की खोज में निकले हुए रामचन्द्र जी की दुःखोन्मक्त आँखें देखकर वहाँ के पशु–पक्षियों के दुःखाश्रुओं से लेखक ने गोदावरी के विमल जल को कषाय होता हुआ चित्रित किया है। गौतमी गोदावरी तथा वशिष्ठ गोदावरी के रूप में दो जल धाराओं में लेखक ने 'त्याज्य संमृतार्थानाम्' के सनातन सिद्धान्त को याद किया है तो उसके सरस जल से पैदा होने वाले शवि धान्य पर परिपुष्ट होकर वेवघोष करने वाले ब्राह्मणों का निवास बनाया। गोदावरी का जल–प्रवाह जब पहाड़ों से निकलकर गौरव के साथ आता है तो उसमें स्थित छोटे–बड़े जहान नदी के बच्चों जैसे दिखाई देते हैं। उसके नल भंवरी को लेखक ने बच्चों की उपमा देने का प्रस्ताव किया है, क्योंकि वे जहाँ–तहाँ पैदा होकर कुछ देर तक दिखाई देते हैं, बड़े तूफान और स्वांग रचते हैं, एकाध क्षण में इस देते हैं और फिर टूट पड़ते हैं। वे चाहे जहाँ से आते और चाहे जहाँ चले जाते या लुप्त हो जाते हैं। गोदावरी के जल में कासकी सफेद कलगियों का स्थावर प्रवाह दूर–दूर चलता हुआ नजर आता है, जो पवन के साथ षड्यन्त्र रचता है और मनमानी लहरे उछाल सकता है तथा उसे गोदावरी के विशाल जल प्रवाह से होड़ करते संकोच नहीं होता है। गोदावरी के जल में संस्कृति के उपासक भारतवासी गंगाजल के कलश आधे खाली करते हैं और फिर गोदावरी के जल से उन्हें भरकर ले जाते हैं। यह भव्य विधि है और एक पवित्र भाव–प्रधान काव्य है और हमारे सांस्कृतिक समन्वय का प्रतीक है।

लेखक की भावनात्मक अनुभूति

यात्रा केवल बाह्य सौंदर्य का अवलोकन नहीं होती, बल्कि यह लेखक की आंतरिक संवेदनाओं और अनुभूतियों का भी प्रतिबिंब होती है।

आध्यात्मिकता और भक्ति भावना– गोदावरी नदी को भारतीय परंपरा में पवित्रता का प्रतीक माना जाता है। लेखक इसे केवल एक नदी के रूप में नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक शक्ति के रूप में देखते हैं। नदी के किनारे बसे मंदिर, संतों का प्रवास, और धार्मिक अनुष्ठान लेखक की भक्ति भावना को जागृत करते हैं।

शांति और आत्ममंथन– यात्रा के दौरान लेखक को आत्ममंथन और मानसिक शांति का अनुभव होता है। वह प्रकृति की गोद में स्वयं को खोजने का प्रयास करते हैं और इसे अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण अनुभव मानते हैं।

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अनुभूति– लेखक केवल प्रकृति की सुंदरता का ही वर्णन नहीं करते, बल्कि वहां की संस्कृति, परंपराओं और ऐतिहासिक धरोहरों को भी अपनी संवेदनशील दृष्टि से देखते हैं। मंदिरों की वास्तुकला, धार्मिक अनुष्ठान, और स्थानीय लोगों की जीवनशैली उन्हें भावनात्मक रूप से प्रभावित करती है।

निष्कर्ष

काका कालेलकर का 'दक्षिणी गंगा गोदावरी' केवल एक यात्रा वृत्त नहीं, बल्कि एक गहरी आध्यात्मिक अनुभूति और प्रकृति से तादात्म्य स्थापित करने का प्रयास है। इस कृति में लेखक ने गोदावरी नदी के सौंदर्य, उसके तटों पर बसे सांस्कृतिक और धार्मिक स्थलों, तथा दक्षिण भारत की प्राकृतिक छटा का सजीव चित्रण किया है। प्राकृतिक सौंदर्य के वर्णन में काका कालेलकर ने न केवल नदी की प्रवाहमान धारा, हरियाली से घिरे घाटों और पर्वतों का उल्लेख किया है, बल्कि उन्होंने सूर्यास्त, चंद्रमा की रोशनी, जलधाराओं की गति और वहां के शांत वातावरण को भी संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। प्रकृति के इन दृश्यों को देखकर वे केवल बाह्य सौंदर्य का अनुभव नहीं करते, बल्कि उनके भीतर एक आत्मिक शांति और आध्यात्मिक चेतना जागृत होती है। लेखक की भावनात्मक अनुभूति इस यात्रा वृत्त को और अधिक प्रभावशाली बना देती है। गोदावरी को 'दक्षिणी गंगा' के रूप में देखकर वे इसकी पवित्रता और सांस्कृतिक महत्ता को दर्शाते हैं। इस यात्रा के दौरान वे केवल बाहरी दुनिया को देखने तक सीमित नहीं रहते, बल्कि अपने भीतर झांकने और आत्ममंथन करने का अवसर भी प्राप्त करते हैं। उनके शब्दों में प्रकृति एक जीवंत शक्ति के रूप में प्रकट होती है, जो न केवल आनंद देती है, बल्कि चिंतन और ध्यान का माध्यम भी बनती है। 'दक्षिणी गंगा गोदावरी' केवल एक यात्रा वृत्त नहीं, बल्कि यह प्रकृति के साथ गहरे संबंध, भारतीय संस्कृति की महत्ता और लेखक की आत्मीय अनुभूतियों का एक अनुपम दस्तावेज है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कालेलकर, काका, दक्षिणी गंगा गोदावरी, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद।
2. कालेलकर, काका, (1950), स्मृतिचित्र, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद।
3. सांकृत्यायन, राहुल, (1955), घुमक्कड़ शास्त्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. नाग, श्यामसुंदर, (2003), यात्रा साहित्य का इतिहास और विकास, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
5. दत्त, निरंजन, (2012), भारतीय यात्रा साहित्य : परंपरा और प्रयोग, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
6. गांधी, मोहनदास करमचंद, (1927), सत्य के प्रयोग (आत्मकथा), नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद।
7. भारतीय साहित्य परिषद, (2015), यात्रा वृत्तांत : स्वरूप और विश्लेषण, साहित्य संगम, वाराणसी।
8. यायावर, शंभुनाथ, (2018), यात्रा साहित्य का अनुशीलन, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. तिवारी, रमेश, (2010), भारतीय यात्रा वृत्तांत पर एक दृष्टि, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
10. शर्मा, रामप्रसाद, (2005), प्राकृतिक सौंदर्य और साहित्य, साहित्य भवन, मेरठ।